SONAM BALA
(DEPT. OF GEOGRAPHY)
A.N.D. COLLEGE, SHAHPUR PATORY, SAMASTIPUR

18th MAY 2020
MONDAY

FOR B.A. - II (Hons)
PAPER - 3, GEOGRAPHY OF INDIA & BIHAR

LECTURE — 46

UNIT - 4

TYPES OF RURAL SETTLEMENT
ग्रामीण अधिवासों के प्रकार

ये वे बस्तियाँ होती हैं, जो अपने तात्कालिक क्षेत्र से घनिष्ठ रूप से संबंधित होती हैं। जहाँ मानव अपने जीविकोपार्जन के लिए विशेष रूप से कृषि अथवा उससे संबंधित कार्यों में लगा रहता है। ऐसा अनुमान है कि विश्व में प्रत्येक 3 व्यक्तियों में 2 व्यक्ति ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं जो पुरवे और गाँवों का बिखरा हुआ अथवा गुच्छित स्वरूप होता है। ग्रामीण अधिवासों में अधिकांश लोग कृषि, लकड़ी काटने वाले पशुचारक, शिकारी आदि लोग निवास करते हैं। इनका प्रारंभ कृषि फार्मों से होता है। यहाँ के निवासी पारस्परिक सहयोग से कृषि फर्मों पर कार्य करते हैं और सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में एक-दूसरे का सहयोग करते हैं।

ग्रामीण अधिवासों के प्रकार

ग्रामीण बस्तियों को आकार एवं स्वरूप की दृष्टि से निम्न प्रकारों में विभक्त किया जाता है —

1) फार्म - गृह
2) पुरवा / नगला
3) गाँव
4) बाजारी गाँव

1) फार्म - गृह (FARMSTEAD) ⟶ यह मुख्यतः खेतिहर मैदानों की एक ईकाई होती है जिसमें

Scanned by CamScanner

न केवल कृषि की जाती है वरन् जहाँ वृक्षारोपण और पशुपालन व्यवसाय भी विकसित हो जाते हैं। ऐसे कृषि-गृह कई गाँवों के बीच में हो सकते हैं अथवा एक ही गाँव के आस-पास। यह क्षेत्र मुख्यतः वहीं पाया जाता है जहाँ धरातल का जल पर्याप्त मात्रा में हो और वहाँ उपजाऊ भूमि हो। प्रत्येक कृषि गृह एक-दूसरे से कुछ दूरी पर बना होता है। यह कच्चा या पक्का बना होता है। इसी में फार्म का स्वामी उसके परिवार के सदस्य नौकर, पशु आदि भी रहते हैं। इस गृह के निकट ही अनाज भरने के लिए भंडार, बीजगोदाम, पशुओं का चारा, खाद, अन्य यंत्र एवं उपकरण, ट्रैक्टर, हैरो हल, कम्बाइन हारवेस्ट, सिंचाई के यंत्र व मशीनें अन्य सामान रखने के गोदाम आदि बने होते हैं। सुअरों का बाड़ा, मुर्गियों के कमरे, चौपायों के बाड़े, गैरेज, जल भरने के लिए हौज आदि की भी पूरी-पूरी व्यवस्था होती है। वर्तमान में बिजली टेलीफोन आदि से भी कृषि सह पूर्णतः सुसज्जित होता है।

कृषि का सामान होने के लिए कृषक का स्वयं का ट्रक या मशीनों और वाहनों की मरम्मत करने के लिए निकट में ही उचित व्यवस्था भी होती है। इन्हें अमेरिका में विशाल बड़े भी कहते हैं। इनका क्षेत्रफल सैकड़ों से हजारों हेक्टेयर तक होता है।

२) पुरवा (HAMLETS) → नगले या पुरवे गाँव की अवस्था के द्योतक होते हैं। वे ही सुअवसर एवं सुविधाएँ पाकर कालांतर में गाँव, बाजार गाँव और कस्बों का रूप ले लेते हैं। पुरवा या नगला कुछ झोपड़ियों का घरों का वह स्वरूप होता है जो कि गाँव की अपेक्षा आकार में छोटा होता है। जिसका निर्माण विभिन्न कारणोंवश किसी ग्राम से आए हुए एक

Scanned by CamScanner

ही बिरादरी के लोग रहते हैं जो बिना किसी योजना के पास-पास बने होते हैं, यहाँ तक कि इनमें मार्ग एवं गलियाँ भी स्पष्ट नहीं होती हैं। इन नगलों में कुछ प्रकीर्ण अधिवासों के गुण जैसे - एकांत स्थित छोटा आकार दूसरी ओर सघन बस्तियों के गुण जैसे - घरों का पास-पास होना। कई जातियों के लोगों का रहना मकानों के मध्य में कुछ-कुछ मार्गों या गलियों का स्पष्ट होना पाए जाते हैं क्योंकि नगले या पुरवे बढ़कर ही गाँव का रूप ले लेते हैं।

3) गाँव (VILLAGE) → गाँव नगले या पुरवे का एक बड़ा स्वरूप है जिसमें स्पष्टता कृषक वर्ग रहता है। कृषि कार्य से संबंधित अनेक लोग जैसे - लुहार, बढ़ई, धोबी, जुलाहे, मोची, कोली आदि भी गाँव में रहते हैं जो कि किसान की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। किसान उन्हें उनकी सेवाओं के बदले में अनाज देता है। इस प्रकार पारस्परिक निर्भरता द्वारा उनमें सहयोग तथा सामाजिक एकता की भावना जाग्रत होती है। गाँव में प्राय: मकानों की संख्या अधिक होती है तथा न केवल गाँव के अंदर अपितु एक गाँव अन्य गाँव से भी स्पष्ट मार्गों तथा गलियों द्वारा जुड़ा होता है। प्राय: गाँव और अधिक विकसित होकर बाजारी गाँव बन जाता है।

4) बाजारी गाँव (MARKET VILLAGE) → आवश्यक अनावश्यकताएँ उपलब्ध होने पर एक गाँव विकसित होता हुआ बाजारी गाँव में बदल जाता है और उसमें बाजार के गुण आ जाते हैं, जैसे - विद्यालय चिकित्सा, सुविधा, डाकघर, पुस्तकालय आदि की सुविधाओं की प्राप्ति। गाँव की आवश्यकता पूर्ति हेतु कुछ

Scanned by CamScanner

दुकानों का खुलना तथा क्रय - विक्रय की सुविधा हेतु सप्ताह में एक - दिन या दो दिन हाट का लगना आदि, जब गाँव में बाजार के गुण आ जाते हैं तो उन्हें बाजारी गाँव कहा जाता है। बाजारी गाँव विकसित होकर कस्बे का रूप ले लेता है।

Scanned by CamScanner